ORIGINAL RESEARCH PAPER

Home Science

मुनस्यारी क्षेत्र के ऊनी उद्योग में कार्यरत महिलाओं के समाज में प्रचलित रीति– रिवाज, परम्पराएं व कुप्रथाएं

KEY WORDS: जोहारी शौका, रीति–रिवाज, परम्पराएं, कुप्रथाएं ।

गीता शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, (उत्तराखण्ड)

डॉ छवि आर्या सहायक प्राध्यापिका, गृह विज्ञान विभाग डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, (उत्तराखण्ड)

ABSTRACT

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर जो भी क्रिया–कलाप, भाषा, परिधान, जीवन शैली के तौर–तरीके, परम्पराएं तथा जीवन प्रणाली उसका सामाजिक स्तर कहलाता है। जोहारी शौका समाज की सामाजिक संरचना निराली है। जोहारी शौका समाज एक विशिष्ट प्रकार की सामाजिक व्यवस्था अपने आप में संजोए हुए है। पर्वतीय अंचलों में रहने वाली शौका जनजाति के लोग सच्चे, सीधे, व्यवहार कुशल होते हैं। शौका समाज की कुछ परम्पराएं और मान्यताएं है। पारिवारिक शिष्टाचार परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को मानने होते हैं। प्रणाम करते समय 'ढोक' शब्द को प्रयोग करते हैं। परिवार में शुभ कार्यों का आरम्भ मंगल गीतों से होता है तथा स्थानीय देवी देवताओं के प्रति अटूट विश्वास रखते है। किसी भी नवीन कार्य से पूर्व विशेष रूप से पूजा अर्चना की जाती है ।

प्रस्तावना–

पिथौरागढ़ जिला उत्तराखण्ड राज्य का एक सीमान्त जिला है। क्षेत्रफल की दृष्टि से पिथौरागढ़ जनपद पर्वतीय प्रदेश का तीसरा सबसे बड़ा जिला है। मुनस्यारी, पिथौरागढ़ जिले की एक प्रमुख तहसील है। मुनस्यारी, भारत–तिब्बत सीमा के मध्य महाहिमालय की ढलान युक्त भूमि रामगंगा तथा गोरी गंगा घाटी में स्थित है। यह क्षेत्र तीन ओर से उच्च हिमालय पर्वत शिखरों से घिरा हुआ है। मुनस्यारी तहसील की गोरी नदी घाटी को जोहार के नाम से जाना जाता है। जोहार क्षेत्र मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार में विभाजित है। **पांगती, (2006)**

जोहार क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ विषम होने के कारण अधिकांशतः वर्ष भर बर्फ रहती है। जिससे यह क्षेत्र काफी प्रभावित होता है। जोहार क्षेत्र के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण भौगोलिक दशायें हैं। मल्ला जोहार क्षेत्र अधिक ऊँचाई में होने के कारण यहाँ हिमपात एवं शीत लहर का प्रकोप अधिक रहता है। तल्ला जोहर क्षेत्र घाटी में होने के कारण यहाँ का मौसम मल्ला जोहार की अपेक्षा सामान्य रहता है। जोहार क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता अद्वितीय है। जौलजीवी में गोरी एवं काली नदियों का संगम स्थल है। इस क्षेत्र में हिमाच्छादित शिखर तथा ग्लेशियर भी है। इस क्षेत्र की नदियाँ ,पर्वत, ढलान युक्त रास्ते और समतल बुग्याल अत्यन्त मनमोहक है। **जोशी, (1983)**

जोहारी शौका समाज में पितृवंशीय परिवारों का प्रचलन है। शौका परिवारों में मुखिया पुरूष को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। परिवार के किसी भी कार्य को करने में मुखिया की पूर्व स्वीकृती लेनी आवश्यक है। मुखिया के आदेशानुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्यों का पालन करना होता है। इस समुदाय में संयुक्त एवं एकांकी दोनों ही परिवारों का प्रचलन है। शौका परिवारों में आपसी प्रेम, सहिष्णुता और भाईचारा रहता है। अधिकांश शौका पूरे गाँव को अपना परिवार मानते हैं। गाँव के किसी परिवार को कष्ट होने पर पूरा गाँव उसका सहयोग करता है और किसी व्यक्ति के परिवार में खुशी का माहौल होने पर पूरे हर्षो उल्लास के साथ सभी ग्रामवासियों द्वारा मनाया जाता है।

जोहारी शौका समाज की कुछ अनूठी परम्पराएँ हैं जो कुमाऊँ गढ़वाल के रीति–रिवाजों से भिन्न हैं। जोहारी शौका समाज कई अपने स्थानीय रीति–रिवाजों व परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है। जैसे– भाषा, वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, त्यौहार, व्यवसाय ऊनी उद्योग व जड़ी – बूटी, स्थानीय गायन व नृत्यकला। अधिकांशतः विशेष अवसरों पर छौलिया नृत्य, व ढुस्का नृत्य किया जाता है।

जोहारी शौका समाज में महिलाएं समस्त घरेलू कार्यों के साथ–साथ कृषि व पशु कार्यों में भी संलग्न हैं। जैसे– पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था करना, बीज बोना, सब्जियां, दालें व फल घरेलू स्तर पर छोटे –छोटे सीढ़ीनुमा खेतों में खेती करते हैं और ओखल कूटना, हाथ की चक्की चलाना एवं ऊनी उद्योग के कार्य करती हैं। पुरूष वर्ग कृषि जैसे– हल चलाना, ईंधन की व्यवस्था, व्यापारिक कार्य करना व भोजन की व्यवस्था करना इत्यादि करते है। परिवार के सदस्यों द्वारा कार्य का विभाजन किया जाता है।

जोहारी शौका समाज की परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों के सम्बन्ध में बहुत अल्प अध्ययन किया गया है। इस विषय पर शोधार्थी को बहुत अल्प शोधपत्र उपलब्ध हुए। अतः यह अध्ययन मुनस्यारी के निचले हिमालयी सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के जोहारी शौका समाज में प्रचलित रीति–रिवाजों व कुप्रथाओं पर किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

चयनित जोहारी शौका समाज में प्रचलित परम्पराओं, रीति– रिवाजों, व कुप्रथाओं का अध्ययन करना।

साहित्य–सर्वेक्षण ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक जीवन व पुरानी रूढ़ीवादी विचारधारा को व्यक्त करता है:–

अग्रवाल, (2003) ने अपने अध्ययन में बताया कि महिलाओं से सम्बन्धित अनेक कठिनाइयों एवं समस्याओं से सम्बन्धित परिवार व समाज के प्रति अपने कर्तव्यों तथा दायित्वों का निर्वहन। महिलाएं प्राचीन काल से स्वतन्त्र न होकर पराधीन ही रही है। जिससे महिलाओं को अनेक कठिनाइयों व समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारा समाज पुरूष प्रधान होने के कारण पुरूषों द्वारा महिलाओं पर अधिकार थोपे जाते हैं। जैसे:– पिता, पति, पुत्र द्वारा।

साह, (1986) ने अपने अध्ययन में बताया कि ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक जीवन, पुरानी रूढ़ीवादी विचारधारा को व्यक्त करता है। जिसमें धर्म की प्रधानता, अशिक्षा, भाग्यवाद आदि के कारण महिलाओं के प्रति विभिन्न तरह के अपराध जैसे:– कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, मार–पीट, बलात्कार व अपहरण सम्बन्धी अपराध बढ़ने से महिलाओं का जीवन अत्यन्त कष्टप्रद होता जा रहा है।

उपाध्याय, (2018) ने अपने अध्ययन में बताया कि शौका रं समाज एक पितृसत्तात्मक जनजातीय समुदाय है। इस समाज में पुरूष का स्थान महिलाओं से उच्च माना जाता है। लेकिन महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। प्रत्येक समाज में कुछ भेद–भाव अवश्य पाये जाते है जो कि कभी–कभी सामाजिक समस्याओं का रूप धारण कर लेते है।

रायपा, (1974) ने अपने अध्ययन में बताया कि शौका समाज में वृद्ध स्त्री व पुरूष की आज्ञा का पालन यथा अनुरूप करना पड़ता है। शौका महिलाएं परिवार का भरण–पोषण कठिन परिश्रम से करती हैं। इस समाज में अन्य समाजों की तुलना में संस्कार, अपनत्व, श्रम, एकता, सहयोग तथा भाईचारा अधिक देखने को मिलता है। महिलाओं में पारिवारिक जीवन के बहुत से कार्यों का उत्तरदायित्व भी होता है।

जोशी, (1983) ने अपने अध्ययन में बताया कि भोटान्तिक समाज में खान–पान के विभिन्न स्थानीय व्यंजनों का प्रयोग किया जाता है। इन व्यंजनों में सत्तू (तिब्बती जौ के आटे से बना) केक प्रत्येक शुभ कार्यों में बनाया जाता है। भोटान्तिकों का प्रिय भोजन सूखा मांस है। इनसे वह कुछ विशिष्ट व्यंजन बनाते है। मांस के छोटे–छोटे टुकड़ों को मसालों में मिलाकर मोमो बनाए जाते है। गिमा या ग्यासू' जो नमक मसाले के साथ मिलाकर कलेजा, खून तथा मांस के कोमल टुकड़ों से बना व्यंजन होता है।

बिष्ट, (1997) ने अपने अध्ययन में बताया कि भोटांतिक समुदाय के पेय पदार्थों में 'ज्या' प्रमुख है। लकड़ी के बर्तन में उबलता हुआ पानी, दूध, मक्खन, नमक, चायपत्ती, और ज्येरल वृक्ष की छाल डालकर घोल बनाने तक मथा जाता है। यह नमकीन चाय तिब्बतियों द्वारा भी प्रयोग की जाती है।

साह, (1986) ने अपने अध्ययन में बताया कि ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक जीवन, पुरानी रूढ़ीवादी विचारधारा को व्यक्त करता है। जिसमें धर्म की प्रधानता, अशिक्षा, भाग्यवाद आदि है। महिलाओं के प्रति विभिन्न तरह के अपराध जैसे कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, मार–पीट, बलात्कार व अपहरण आदि बढ़ने से महिलाओं का जीवन अत्यन्त कष्टप्रद होता जा रहा है।

तिवारी, (1977) ने बताया कि शौका जनजाति के भोटिया समुदाय में धार्मिक आस्था है। जिसमें भौगोलिक परिस्थितियों के कारण हिन्दू धर्म और तिब्बत धर्म में घनिष्ठ सम्बन्ध थे। और ये तिब्बती मूल के देवी–देवताओं की पूजा करते थे। शौका समुदाय के हर घर में देवी–देवताओं की पूजा का प्रचलन हैं।

पाण्डे, (1937) ने बताया कि शौका समुदाय में अंधविश्वास और रूढ़ीवादी विचारधाराओं का प्रचलन है। इस समाज में पूर्वज भूत–प्रेत व अंधविश्वास में विश्वास करते है। कोई व्यक्ति यदि बीमार होता है तो बुरी आत्मा समझकर उसका पूजन करते है।

शोध विधि–

प्रस्तुत सर्वेक्षण कार्य पिथौरागढ़ जिले के मुनस्यारी विकासखण्ड में किया गया है। अध्ययन हेतु मुनस्यारी विकासखण्ड के मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार क्षेत्र के पाँच–पाँच ग्रामों का चयन यादृच्छिक विधि (Random sample) द्वारा किया गया।

शोध हेतु चयनित जोहर क्षेत्र के ग्रामों से कुल 200 महिलाओं का चयन किया गया। शोध में 100 महिलाएं मल्ला जोहार क्षेत्र एवं 100 महिलाएं तल्ला जोहार क्षेत्र से चयनित की गई। शोध अध्ययन हेतु चयनित 200 महिलाओं से जानकारी के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली महिलाओं को वितरित की गई। इस प्रश्नावली का मुख्य उद्देश्य ऊनी उद्योग में कार्यरत महिलाओं के समाज में प्रचलित रीति– रिवाज एवं परम्पराओं व कुप्रथाओं के संदर्भ में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना था।

परिणाम एवं व्याख्या–

जोहारी शौका समाज में महिलाओं की भूमिका– जोहारी शौका समाज पुरूष प्रधान होने के कारण महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं। परन्तु महिलाओं को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। शौका महिलाएं सरल, उदार और कष्ट सहने वाली ममतामयी माँ है। साधारण विपत्तियों में सदा प्रसन्नचित रहकर अपनी सूझ–बूझ से सभी कार्यों को करने के लिए तत्पर रहती हैं। विषम परिस्थितियों ने जोहारी महिलाओं को मितव्ययी, दूरदर्शी और साहसी बना दिया।

शौका समाज की महिलाओं की दैनिक कार्य प्रणाली काफी व्यस्त होती है। जोहारी शौका महिलाएं समस्त घर की जिम्मेदारियों का निर्वहन अकेले ही करती हैं। यह महिलाएं कृषि कार्य,

पशुपालन, पशुओं के साथ जंगल जाना, अति दुर्गम पहाड़ियों मे चढ़कर घास की व्यवस्था करती है और अति जोखिम भरे कार्यों को भी अकेले ही करती है।

शौका महिलाओं के दैनिक कार्य–
- घर की सफाई।
- भोजन बनाना।
- जंगल से लकड़ी लाना।
- पशुओं के साथ जंगल जाना।
- पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था करना।
- कृषि कार्य करना।

शौका महिलाओं के विशेष कार्य–
- ऊनी उद्योग के कार्य।
- ऊन की कताई करना।
- ऊन की रंगाई करना।
- ऊन का गोला बनाना ।
- विभिन्न ऊनी वस्त्रों का निर्माण करना।

हाथ की बुनाई द्वारा निर्मित वस्तुएं।
- स्वेटर।
- टोपी ।
- दस्तानें ।
- मफलर।
- छोटे बच्चों के ऊनी फ्रोक व पैजामा ।
- स्टाल।
- मोजे।

करधें द्वारा निर्मित वस्तुएं।
- दन ।
- (कालीन) थुलमा।
- चुटका ।
- पंखी ।
- आसन।
- ऊनी पैजामा एवं ऊनी कुर्ता।
- कमर में पंखी (ऊनी चादर)।

जोहारी शौका समाज में पलायन की स्थिति– पुरूष वर्ग रोजगार हेतु नगरों एवं महानगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। गाँव में शेष रह गये पुरूषों मे से अधिकांश पुरूष मदिरा, धूम्रपान, जुए में लिप्त होते जा रहे हैं। इन परेशानियों से महिलाओं की स्थिति निराशाजनक होती जा रही है। वह कई कुप्रथाओं की शिकार भी हो रही हैं। अति दुर्गम क्षेत्र में कष्ट साध्य जीवन व्यतीत कर रही हैं। फिर भी इन महिलाओं की श्रम करने की सामर्थ्य अद्भुत है। शौका महिलाएं परिवार और समाज में सांमजस्य बनाये रखती हैं।

जोहारी शौका समाज के परम्परागत परिधान– शौका जनजाति के लोग जलवायु एवं आवश्यकतानुसार परिधानों को धारण करते है। अधिकांश वस्त्र ऊन से निर्मित होते हैं। जोहारी शौका समुदाय में पुरूष प्रायः ऊनी पैजामा एवं ऊनी कुर्ता (बखुला) पहनते थे। कमर में पंखी (ऊनी चादर) लपेटे रहते थे। युवा वर्ग सिर मे सूती टोपी एवं वृद्ध व्यक्ति पगड़ी बांधते थे। स्त्रियों के परिधानों में जोहारी शौका महिलाएं ऊन निर्मित चादर घाघरा के ऊपर कंधे के नीचे घुटनों तक लपेटे रहती थी। दो मीटर सफेद कपड़ा सिर में धारण करती थी। महिलाओं की वेशभूषा (अंगिया और ब्लाउज) ऊन के बनते थे। इन वस्त्रों को स्वयं शौका महिलाएं तैयार करती थी। वर्तमान समय में शौका जनजाति के परिधानों में नवीनता, आधुनिकता का समावेश दिखायी देता है। **पांगती, (1992)**

पुरूषों के परम्परागत परिधान	महिलाओं के परम्परागत परिधान
• ऊनी पैजामा। • ऊनी कुर्ता। • कमर में पंखी (ऊनी चादर)। • टोपी । • पगड़ी।	• घाघरा । • अंगिया और ब्लाउज । • दो मीटर सफेद कपड़ा सिर में धारण, • काला कपड़ा कंधे के नीचे घुटनों तक लपेटने के लिए।

जोहारी शौका समाज के परम्परागत स्थानीय व्यंजन–
जोहारी शौका समुदाय में भोज्य पदार्थों को जलवायुविक दशाओं के अनुरूप प्रयोग किया जाता है। शौका समुदाय का भोजन स्थानीय आहार भुमला, कोकला, पप्यूर, और माँस है। शीत ऋतु में अधिकांशतः सूखे माँस का प्रयोग किया जाता है। भोटिया शौका समुदाय पेय पदार्थों का प्रयोग जलवायु की दृष्टि से करते है जिनमें ज्या, वलमा, सोमरस (मदिरा) को आवश्यक पेय पदार्थ माना जाता है।

खादय पदार्थ	खादय सामग्री
भुमला	बचें हुए पके चावलों को घी में भूनकर नमक, मिर्च व मसालों से छौंका जाता है। उसे भुमला कहते है।
कोकला	हाथ द्वारा निर्मित आटे के नूडल्स को तैयार कर थोया, जम्बू व मसालों से छौंक कर तैयार किया जाता है। उसे कोकला कहते है।
पत्यूर	अरबी के पत्ते में आटे का लेप लगाकर भाप द्वारा पकाया जाता है। उसे पत्तयूर कहते है।
ज्या	नमकीन चाय जिसमें नमक, घी, दूध व ल्वेटा की छाल डालकर तैयार की जाती है।
सत्तू	तिब्बती जौ के आटे से बना केक।
मोमो	मांस के छोटे–छोटे टुकड़ो को मसालों में मिलाकर मैदे की लोई में भरकर तैयार किया जाता है।
गिमा या ग्यासू	बकरी या भेड़ के कलेजे के छोटे–छोटे टुकड़ो को नमक व मसालों में मिलाकर गिमा या ग्यासू तैयार किया जाता है।
पूली	चावल गेहूँ के आटे को गूथकर छोटी–छोटी पूली तैयार की जाती है।
खाजा	धान को भिगोकर व भूनकर ओखल में कूटकर खाजा तैयार किया जाता है।
सेज	स्थानीय बियर बनाने के बाद बचें चावलों को घी में भूनकर तैयार किया जाता है।
चुनिया	भंग्यूर की पत्ती को मैदा व चीनी के घोल में डुबोकर तेल में तलकर चुनिया तैयार की जाती है।
मडुवें	मडुवें के आटे को पानी मे गूथकर उसकी रोटी तैयार की जाती है।
स्थानीय आलू के गुट्के	आलू को उबालकर जम्बू थोया व मसालों का छौंका लगाकर आलू के गुट्के तैयार किये जाते है।
तीमूर का सूप	तीमूर व भांग को पीसकर उसके रस में नमक, मिर्च व मसालें डालकर तैयार किया जाता हैं।
सूखा मीट	सीनीय भेड़ व बकरी के मांस को सूखाकर छोटी– छोटी मालाएं बनायी जाती है और जाड़ों के मौसम में आवश्यकतानुसार सब्जी बनायी जाती है ।

अधिकांश शौका स्त्री पुरूष सोमरस का प्रयोग प्रत्येक त्यौहार में करते हैं। जोहारी समाज में परम्परागत रीति–रिवाजों का उद्देश्य समाज की मर्यादाओं को मानना, सभी सदस्यों को सामाजिक संस्कारों से जुड़े रखना है।

वर्तमान समय में जोहारी क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं का अभाव– जोहारी शौका समाज में मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण पलायन की अधिकता भी बढ़ रही है। अधिकांश पुरूषों एंव युवाओं का पलायन रोजगार हेतु नगरों की और बढ़ रहा है। पलायन होने से घर की समस्त जिम्मेदारियां महिलाओं पर आ जाती है। जिससे उनकी समस्याएं और बढ़ जाती है। महिलाओं के लिए यह एक गम्भीर चुनौती है। महिलाओं की यह समस्याएं वर्तमान परिपेक्ष्य में भी बनी हुई है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों का विकास महिलाओं के लिए एक सपना बनकर रह गया है।

वर्तमान समय में भी कुछ अशिक्षित बेरोजगार परिवारों का पूरा खर्चा पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं उठा रही है। कुछ महिलाओं द्वारा परिवार की संरक्षिका का उत्तरदायित्व एक कुशल मुखिया बनकर किया जा रहा है। ऊनी उद्योग के द्वारा शौका महिलाएं अपनी आर्थिक व्यवस्था को चलाने में मुख्य भूमिका निभा रही हैं। इसके साथ ही कृषि, पशुपालन, जड़ी–बूटी, पर्यटन आदि कार्यों में भी संलग्न है।

जोहार वासियों का पैतृक व्यवसाय ऊनी उद्योग होने के कारण आजीविका का सदैव मुख्य साधन रहा है। ऊनी उद्योग घरेलू स्तर पर लघु उद्योग के रूप में चलाया जाता था। ऊनी उद्योग के कार्य में महिला एवं पुरूष को दक्षता प्राप्त है। महिलाएं बुनाई का कार्य, पुरूष ऊन कातने, भेंड बकरियों के साथ घर से बाहर रहने, जौलजीवी, बागेश्वर के मेलों में निर्मित वस्तुओं के विक्रय का कार्य करते हैं।

जोहारी शौका समुदाय की महिलाएं विभिन्न कलाओं में निपुण हैं जैसे– गायन, नृत्य, बुनाई, कपड़ों में कशीदाकारी आदि। इसलिए जोहारी महिलाएं सदैव अपने कार्यों में व्यस्त रहती हैं। जोहारी महिलाएं अन्य समाज की महिलाओं से परिश्रमी हैं। वर्तमान समय में जोहारी महिलाओं की स्थिति में कुछ परिवर्तन हुए हैं। जिसमें महिलाओं ने उच्च शिक्षा, स्वरोजगार को अपनाया हैं। वर्तमान समय में जोहार की महिलाएं काफी अच्छे पदों पर कार्यरत हैं। महिलाएं एवं बालिकाएं शिक्षा एवं रोजगार के प्रति जागरूक है और शिक्षा को अधिक प्राथमिकता देने लगी है। इसी कारण कई महिलाएं सरकारी निजी कम्पनियों में सेवारत है।

	जोहारी शौका महिलाएं विभिन्न कलाओं में निपुण
गायन	मंगल गीत, चाचरी,
नृत्य	स्थानीय लोक नृत्य, ढुस्का
कशीदाकारी	मेजपोश,सूट, फ्रोक।
व्यापार	ऊनी हस्त निर्मित वस्तुओं का जौलजीबी एवं अन्य मेलों में व्यापार।
जड़ी– बूटी	अतीस, कटकी, गनदराणी आदि जड़ी– बूटी का व्यापार।

जोहारी शौका समाज में प्रचलित प्रसूताकालीन व मासिक धर्म सम्बन्धी कुप्रथाएं– जोहारी शौका समाज में महिलाओं से प्रसूतावस्था, मासिक धर्म, पर्दा प्रथा, पारिवारिक अस्पृश्यता एवं भेदभाव भी प्रचलित है। प्रसूति एवं मासिक धर्म के समय शौका महिलाओं को पशुशाला एवं अन्य आवास में रखा जाता है। शुद्धिकरण के लिए ठण्डे पानी से स्नान एवं वस्त्र धोना आवश्यक होता है । महिलाओं के लिए यह एक घोर अन्याय है। शौका परिवारों में आज भी प्रसूताकालीन और मासिक धर्म की कुप्रथाएं प्रचलित है।

सर्वेक्षण क्षेत्र (मल्ला जोहार एंव तल्ला जोहार के) ग्रामों से चयनित महिला उत्तरदाताओं से बच्चों के विषय में जानकारी– महिला उत्तरदाताओं से बच्चों सम्बन्धी जानकारी प्रस्तुत की गयी हैं–

बच्चों का जन्म हुआ– मल्ला जोहार क्षेत्र से चयनित महिला उत्तरदाताओं के अनुसार 63 प्रतिशत बच्चों का जन्म सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में, 37 प्रतिशत महिलाओं के बच्चों का जन्म घर में हुआ। तल्ला जोहार क्षेत्र से चयनित महिला उत्तरदाताओं कें अनुसार 68 प्रतिशत बच्चों का जन्म सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में हुआ, 32 प्रतिशत महिलाओं के बच्चों का जन्म घर में हुआ।

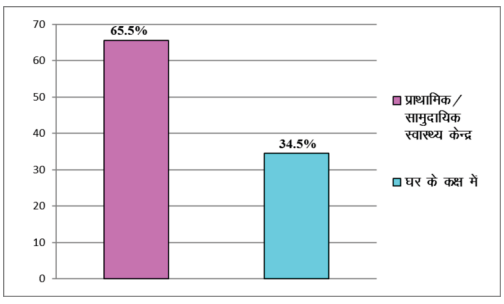

चित्र : चयनित ग्रामों में बच्चों का जन्म हुआ

शोध अध्ययन क्षेत्र (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) से चयनित अधिकांश 65.5 प्रतिशत महिलाओं के बच्चों का जन्म सामुदायिक स्वास्थ्य में हुआ एवं 34.5 प्रतिशत महिलाओं के बच्चों का जन्म घर में हुआ।

पुत्र जन्म को वरीयता दी जाती है– मल्ला जोहार क्षेत्र से चयनित महिला उत्तरदाताओं के अनुसार अधिकांश 60 प्रतिशत परिवारों में पुत्र जन्म को वरीयता दी जाती थी, 40 प्रतिशत परिवारों में पुत्र जन्म को वरीयता नहीं दी जाती थी। तल्ला जोहार क्षेत्र से चयनित महिला उत्तरदाताओं के अनुसार अधिकांश 54 प्रतिशत परिवारों में पुत्र जन्म को वरीयता दी जाती थी, 46 प्रतिशत परिवारों में पुत्र जन्म को वरीयता नहीं दी जाती थी।

शोध अध्ययन क्षेत्र (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) से चयनित महिला उत्तरदाताओं के अनुसार अधिकांश 57 प्रतिशत परिवारों में पुत्र जन्म को वरीयता दी जाती थी, 43 प्रतिशत परिवारों में पुत्र जन्म को वरीयता नहीं दी जाती थी।

वर्तमान समय में भी अधिकांश शिक्षित परिवारों में पुत्र जन्म की अभिलाशा होने के कारण पुत्रियों की संख्या अधिक हो रही है। इसके उपरान्त भी कुछ महिलाएं कन्याभ्रूण हत्या का शिकार बन जाती है ।

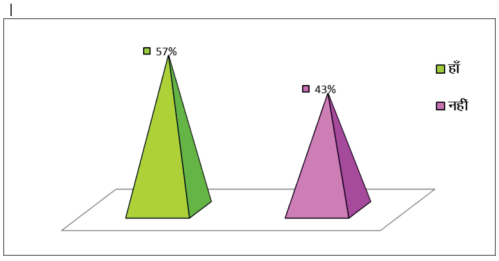

चित्र – चयनित ग्रामों में पुत्र जन्म को वरीयता

बालिका के जन्म होने पर बुरा व्यवहार करते है– मल्ला जोहार क्षेत्र से चयनित अधिकांश 70 प्रतिशत महिलाओं के परिवारों में पुत्री जन्म के उपरान्त महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाता था, एवं 30 प्रतिशत महिलाओं के परिवारों में पुत्री जन्म के उपरान्त महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। तल्ला जोहार क्षेत्र से चयनित अधिकांश 66 प्रतिशत महिलाओं के परिवारों में पुत्री जन्म के उपरान्त महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाता था एवं 34 प्रतिशत महिलाओं के परिवारों में पुत्री जन्म के उपरान्त महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था।

शोध अध्ययन क्षेत्र (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) से चयनित अधिकांश 68 प्रतिशत महिलाओं के परिवारों में पुत्री जन्म के उपरान्त महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाता था एवं 32 प्रतिशत महिलाओं के परिवारों में पुत्री जन्म के उपरान्त महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था।

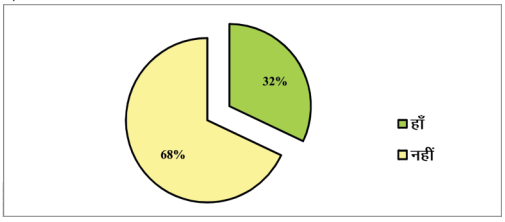

चित्र – चयनित ग्रामों में बालिका जन्म होने पर बुरा व्यवहार

प्रसूति महिला से खान–पान में परहेज सम्बन्धी कुप्रथा– अधिकांश गाँवों में विद्यमान कई प्रथाएं महिलाओं की दिक्कतों का कारण बन रही है। महिलाओं के प्रसव होने पर जच्चा–बच्चा को नामकरण संस्कार तक अलग रख दिया जाता है। नामकरण संस्कार तक प्रसूतिका को अपवित्र माना जाता है। प्रसूति महिला से खान–पान में भी परहेज किया जाता है। जिससे सन्तुलित भोजन का अभाव हो जाता है और दुर्बलता आ जाती है। शरीर रोगों का घर बन जाता है। प्रति वर्ष अति दुर्गम ग्रामों में प्रसवकालीन महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधाएँ समय पर ना मिलने से मृत्यु तक हो जाती है तथा अशिक्षित दाईयों के भरोसे जच्चा–बच्चा दोनों को हानि होती है। वर्तमान परिपेक्ष्य में भी महिलाओं की यह समस्या बनी हुई है।

जोहारी शौका समाज में प्रचलित देवी–देवता, भूत–प्रेत व जादू–टोने सम्बन्धी कुप्रथाएं– बलि प्रथा जोहारी शौका समाज का अभिन्न अंग है। समाज में भूत–प्रेत, जादू–टोना व देवी–देवताओं को मानते हैं और उसका निवारण करते है। देवी–देवताओं को स्मरण करने के लिए 'हे परमेश्वर' का उच्चारण किया जाता है। जादू टोनें के लिए झाड़ फूक किया जाता है। वर्तमान समय में भी कुप्रथाएं प्रचलित है।

सर्वेक्षण क्षेत्र (मल्ला जोहार एंव तल्ला जोहार के) ग्रामों से चयनित महिलाओं के समाज में प्रचलित रीति–रीवाजों में आधुनिकता के प्रभाव के सन्दर्भ में जानकारी– समाज में प्रचलित रीति–रीवाजों में आधुनिकता के प्रभाव सम्बन्धी जानकारी प्रस्तुत की गई हैं–

समाज में प्रचलित रीति–रीवाजों पर आधुनिकता का प्रभाव– अवलोकन से यह ज्ञात हुआ है कि (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) क्षेत्र से चयनित जोहारी शौका महिलाओं के समाज में प्रचलित रीति–रीवाजों में आधुनिकता का प्रभाव पड़ रहा है।

शोध में देखा गया कि भाषा, परिधान, खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, त्यौहारो व संस्कृति में आधुनिकता का प्रभाव पड़ रहा है।

शहरों के सम्पर्क से महिला एंव पुरूषों के पहनावे में परिवर्तन हुए– शोध में यह देखा गया कि (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) क्षेत्र से चयनित महिला एंव पुरूषों का शहरों के सम्पर्क में आने से पहनावे में परिवर्तन होने लगा है। वर्तमान समय में सभी महिला एंव पुरूष प्रचलित आधुनिक पोशाकों को धारण करने लगे है। कुछ विशेष अवसरों में स्थानीय परम्परागत पोशाकों को धारण करते हैं।

मनोरंजन के साधन– शोध अध्ययन क्षेत्र (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) से चयनित शौका महिलाओं के समाज में मनोरंजन के लिए टेलीविजन, मोबाइल, टेपरिकार्डर, रेडियो, स्थानीय मेलों, गीत–संगीत एवं स्थानीय दुस्का चाचरी आदि मनोरंजन के साधनों का प्रयोग करते हैं।

शोध में देखा गया कि (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) क्षेत्र से चयनित अधिकांश महिलाएं वर्तमान समय में मनोरंजन के लिए टेलीविजन, मोबाइल के साधनों का प्रयोग करते हैं।

समाज में मुख्यतः कौन–कौन से त्यौहार मनाये जाते है– शोध अध्ययन क्षेत्र (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) से चयनित जोहारी शौका महिलाओं के समाज में हरेला, बसन्त, पंचमी, घी संक्रान्ति, मकर संक्रान्ति, फूलदेई, बैशाखी एवं विरूड़ाष्टमी आदि त्यौहारों को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

जोहारी शौका समाज के स्थानीय त्यौहार–

- हरेला,
- बसन्त पंचमी
- होली,
- मकर संक्रान्ति,
- घी संक्रान्ति,
- फूलदेई, व बैशाखी,
- सातू आठू या विरूड़ाष्टमी,

सर्वेक्षण क्षेत्र (मल्ला जोहार एंव तल्ला जोहार) से चयनित महिलाओं के समाज में प्रचलित विवाह कुप्रथाओं के संदर्भ में जानकारी:–

किस विवाह को प्राथमिकता दी जाती है– शोध में यह देखा गया कि (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) क्षेत्र से चयनित जोहारी शौका महिलाओं के समाज में एकल विवाह प्रथा प्रचलित है। समाज में एकल विवाह को प्राथमिकता दी जाती है जबकि बहु पत्नी/ बहु पति विवाह को प्राथमिकता नहीं दी जाती है।

विवाह प्रथा में विगत वर्षो में परिवर्तन हुआ– शोध अध्ययन क्षेत्र (मल्ला जोहार एवं तल्ला जोहार) से चयनित जोहारी शौका महिलाओं के समाज में विवाह प्रथा में परिवर्तन होने लगा है

शोध में देखा गया कि वर्तमान समय में वैवाहिक रीति–रिवाज में कुछ परिवर्तन होने लगा है जैसे – वैवाहिक समारोह के प्रीति भोज में आधुनिक व्यजनों का प्रयोग वर–वधु द्वारा आधुनिक आभूषणों एवं आधुनिक पोशाकों का प्रयोग किया जाने लगा है।

जोहारी शौका समाज में प्रचलित विवाह सम्बन्धी कुप्रथाएं– कम उम्र में विवाह होने से जोहारी महिलाओं के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा। जिससे अल्पायु में कई महिलाओं की मृत्यु हो जाती थी। पुरूष दो या तीन विवाह तक कर लेता है परन्तु विधवा महिला दूसरा विवाह करती है तो समाज अनुमति नहीं देता है। जोहारी समाज में महिलाओं की संख्या में कमी होने के कारण जोहारी पुरूषों ने अन्य भोटिया जनजातियों (दारमा, व्यास, गढ़वाल के भोटिया) से विवाह करना शुरू कर दिया। जोहारी महिलाओं को पुरूष के अधीन रहकर जीवन व्यतीत करना पड़ता है और पुरूष के आदेशानुसार नियमों का पालन करना पड़ता है।

निष्कर्श–

जोहारी शौका समाज की सामाजिक संरचना निराली है। जोहारी शौका समाज अपने आप में एक विशिष्ट प्रकार की सामाजिक व्यवस्था संजोए हुए है। जोहारी शौका समाज मे पितृवंशीय परिवारों का प्रचलन है। शौका परिवारों में मुखिया पुरूष को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। जोहारी समाज के कुछ कार्यों को पुरूषों द्वारा एवं घर के समस्त कार्यों को महिलाओं द्वारा सम्पादित किया जाता है। समाज में सभी त्यौहारों जैसे – हरेला, बसन्त, पंचमी, घी संक्रान्ति, मकर संक्रान्ति, फूलदेई, बैशाखी एवं विरूड़ाष्टमी आदि को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। वर्तमान समय में सभी महिला एंव पुरूष प्रचलित आधुनिक पोशाकों को धारण करते है। कुछ विशेष अवसरों में स्थानीय परम्परागत पोशाकों को भी धारण करते हैं।

जोहारी शौका समाज में महिलाओं से प्रसूतावस्था, मासिक धर्म, पर्दा प्रथा, पारिवारिक अस्पृश्यता, भेदभाव भी प्रचलित था। प्रसूति एवं मासिक धर्म के समय शौका महिलाओं को पशुशाला व अन्य आवास में रखा जाता, शुद्धिकरण के लिए ठण्डे पानी से स्नान एवं वस्त्र धोना आवश्यक होता था। महिलाओं के लिए यह एक घोर अन्याय था। कई शौका परिवारों में आज भी प्रसूताकालीन और मासिक धर्म की कुप्रथाएं प्रचलित है। कम उम्र में विवाह होने से जोहारी महिलाओं के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा। जिससे अल्पायु में कई महिलाओं की मृत्यु हो जाती थी।

आज भी विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ, स्थानीय रीति–रिवाज और सामाजिक रूढ़िवादिता आदि समस्याओं का सामना इन महिलाओं को करना पड़ता है। इस क्षेत्र में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध न होने के कारण पलायन की अधिकता भी बढ़ रही है। जिस कारण घर की जिम्मेदारियों का निर्वहन महिलाओं को करना पड़ता है। इन महिलाओं की दिनचर्या काफी कठिन एवं चुनौतीपूर्ण होती है।

वर्तमान समय में जोहारी महिलाओं ने कठिन परिस्थिति में भी घर के उत्तरदायित्वों का निर्वहन बड़ी कुशलता से किया। अपनी मान मर्यादा, घर की लाज–लज्जा और रूढ़िवादी परम्पराओं से घिरी महिलाएं भी धीरे–धीरे समाज की मुख्य धारा से जुड़ कर आगे बढ़ रही हैं। समाज में अग्रणी स्थान प्राप्त कर रही हैं।

संदर्भ सूची

1. Pangtry, S.S. (2006) Munsyari : A Gem in the Indian Himalaya, Tribal Heritage Museum Munsyari Pithoragarh Uttranchal Page No. 75
2. जोशी, ए. के.(1983) भोटान्तिक जनजाति, प्रकाशन बुक डिपो बड़ा बाजार बरेली पृष्ठ सं. 32
3. अग्रवाल, सी0 एम0ए (2003) नारी : अन्तर दर्पण व समाज इण्डियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली पृष्ठ संख्या 5–6
4. साह, आई. (1986) कुमाऊँनी लोग गीत का समाज शास्त्रीय अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल पेज संं 10–11
5. उपाध्याय, (2018) रीता संयुक्त परिवार के बदलते प्रतिमान का एक सामाजिक अध्ययन Indernational Journal of Multidiscilinary research and Development www. allsubject Journal. Com Volume 5, Issue 3 March 2018, Page 95-98
6. रायपा, आर.एस. (1974) सीमावर्ती जनजाति, आनन्द प्रेस बरेली। पृष्ठ सं. 84–85
7. तिवारी आर. सी. (1977) हिमानी सीमान्त के प्रकृति पुत्र कुमाऊँनी संस्कृति पृष्ठ सं.–163
8. पाण्डे, बी. (1937) उत्तराखण्ड इतिहास (वीरगाथा) प्रकाशन दुग्ड्डा गढ़वाल पृष्ठ संख्या 10–11
9. पांगती, आर. सिंह. (1992) मध्य हिमालय की भोटिया जनजाति (जोहार के शौका) तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ स. 88